पारिवारिक विघटन —

पंचम

का संयुक्त परिवार का विघटन

एक परिवार का विघटन
पारिवारिक विषयन

परिवार समाज को महत्वपूर्ण हुआ है। अवस्था है।
परिवार का विषयन पारिवारिक संबंधों के विशेष विकास है।
परिवार में पति-पत्नी, बच्चों तथा अन्य सदस्यों में आपस में प्रेम, सहयोग
tथा हितों उद्देश्यों को सक्ता होता है, जिसके कारण परिवार अपने सभी
कार्यों को भली-भारती करने में और जीवन को सुखी बनाने में सफल होता है।
जब परिवार की अवस्था इसके विकास होती है, तब उसे पारिवारिक विषयन
कहते हैं। पारिवारिक विषयन का अवस्था है जिसमें परिवार के सदस्यों
में हितों, उद्देश्यों और व्यक्तिगत आकांक्षाओं को सक्ता के अभाव से उनमें प्रेम,
सहयोग तथा आत्म-स्वागत को भावनाएं नहीं रहती, जिसके कारण वह पिढ़ा
परिवार अपने पुष्प कार्यों को करने में सफल हुए रहता है।

पुराण

1. सरल दुःख, धार्मिक विषयन और सुधार, पृ. 215
परिवारिक जीवन दुःखी नहीं रहता। मार्टिन न्युम्नेयर ने लिखा है,

"विस्तृत अर्थ में परिवारिक विघटन का अर्थ एकमत्य और निष्ठा का बंग होना, पहले के सम्बन्धों का टूट जाना, परिवारिक धेताना का नाम तथा उदात्तता का विकास है।"

परिवारिक विघटन के दो रूप हैं -- 1. संयुक्त परिवार का विघटन 2. सकल परिवार का विघटन। परिवारिक विघटन के अन्तर्गत संयुक्त परिवार का विघटन प्रमुख है। भारतीय समाज को एक आधारभूत संस्था संयुक्त परिवार था। इस परिवार-पृष्ठाली का ही आजकल विघटन आर्मन्ड हो गया है। संयुक्त परिवार में सम्मिलित सम्पत्ति और सम्मिलित निवास होता है, परिवारिक कर्मचारी तथा सामाजिक व धार्मिक कर्मचारी के सम्बन्ध में समानता होती है। परन्तु अब इस परिवार पृष्ठाली का विघटन हो जाने के कारण सम्मिलित स्व समाप्त हो गया है। पुरानी पोथी एवं नयी पोथी के उन्नयन के कारण भी संयुक्त परिवार धीरे-धीरे विघटन को और अग्रसर हो रहे हैं। पुरानी पोथी शोषण रहे, पुराने पढ़ खुशे पृष्ठ-पृष्ठों को दायेदार है। उसे अपने समय को मिला पर बुढ़े सिद्धान्त आदर्श पूरी होते हैं। वह उनसे दूरित हटाना नहीं चाहती। बड़ी उन्हीं सिद्धांतों को वातावरण में गुजारा जोचन को सार्थकता समझ रही है। वह यह नहीं देखती कि उसके समय की मिला फिल्मर केवल एक "ऐतिहासिक समारक" भर रह गयी है। जो सामने हैं और उपलब्ध हैं, उसी को अपनी आवश्यकतानुसार आकार देने में जुट जाना आज का तक़ज़ा है। उसी पृष्ठ तकरायें की आवाजु नयी पोथी गुलाम बाहर हो। नयी पोथी व पुरानी पोथी के टकराहट के कारण परिवार

---------------------------------
1. तरला दुःखी, सामाजिक विघटन और सुधार, प. 215
विषयित हो रहे हैं। उसका लघु वचन दो रात है, और अपनी
फलवान ब्रो रात है।

संयुक्त परिवार में विपत्त के अनेक कारणों से होता है जिसमें
आर्थिक कारण प्रमुख है --

हमारे समाज में पिता की सम्पत्ति को लेकर कई लड़के-
झगड़े होते हैं। संयुक्त परिवार के विपत्त में पैदा-सम्पत्ति मुख्य कारण है
जिसे ममता कारिमा द्वारा रचित "बेघर " उपन्यास में विषयित किया गया
है। के की जीवन के प्रति निराशावादी दृष्टिकोण रखता है, उसे इस
मानसिक स्थिति में लाने के लिए उसके पिता और बच्चे विमेदार है। अपने
पिता और बच्चे के प्रति के की आक्रोश इन बच्चों में व्यक्त हुआ है
केवल पर्याजित से कहते हैं। " तुमने हैंकर मुझे बाँका दिया है, तुम्हें पता
है मेरे दिल के लिए भाँकता जितना नुकसान देह है, " मेरा बाप मुझे यह
बोंगारों के दे गया है। तुम्हें पता नहीं, मेरे बाप को कोई रहती की
कि हर अध्यारों योज मेरे बचन मिलान को मिले और हर दुरों योज मुझे तुम्हें
पता है उसने ग्रांट रोड का पारसी सालों वाला मकान उसके नाम कर
दिया ताकि मैं अकेला इस बाहिरियां जगह पर लहौ और वह अपने बच्चों को
लेकर ठाठ पर दहार रहे।"

पैदा-सम्पत्ति के कारण जिस प्रकार संयुक्त परिवार विचारित
हो जाते हैं। पैदा-सम्पत्ति के कारण विपत्त को कमाल-यव के बारे रचित
"पुष्पा-टोपर - शाम" उपन्यास में विषयित किया गया है। शायद को उसके
तुमा ने बताया कि यह पृथ्वी वाली बड़ी विलिकार देख ले। इसी दौरान ने
==================================
1. ममता कारिमा, बेघर, पृ. 50-51.
हमारी धूप रोक रही है। वरसों ते इसी हकेली का मुकदमा चल रहा है।
जब गान्ता के सत्र मुकदमा जीत गया तो तभी हकेली को पहाड़ पेसी 
टोसवर में बड़ी बहिया खुली और हकेली वाली अघात गान्ता के सत्र 
को भौगोल ने घोष कर कहा, "छोटी अदालत में मुकदमा जीते हो 
... और तो यहमें बड़ी अदालत तक पहुँच गई। बड़ी अदालत से 
न हुआ तो रानी विक्रोरिया तक जाई। ... विलयत तक दौड़ -
टोड़ू के मार्जी। ... अरे कोई पड़े तुम्हें लोगे के ... टेस्ट लेने हम।
तुम लोगों के पर तक बिखारी न बना दिया तो हमारे पहुँच पर धुक 
तेना। कहते हुए हकेली वाली ने आंगन में धुका था और खेताब से बिखयी 
बन्द कर लो थी। "इस दुःखार दो सम भाइयों के परिवार में सम्पत्ति के 
कारण सटा के लिए मनमुदाय हो बाता है जो परिवारिक विषयन का सभी 
निदर्शन है।


धनाभार के कारण - भी संयुक्त परिवार विषयन को और 
अग्रास हो रहे हैं जिसका निदर्शन पेशहोनिन्सा परेश द्वारा रचित "उत्क घर " 
उपन्यास में लिखा है। रेजमा की हुआ। आन्टी। और भाइया आपस 
में बहस करते हैं। भाइया के जब शब्दों में "आन्टी तुम जानती हो क्या कह 
रही हो। में इतनी मद्दत में इतना बड़ा पर चला रहा हूँ। इसका यही 
ठंडात्तोक है। भी भी नियम ढूँढ़ा। " रेजमा को लगा अब यह घर टूटेगा 
बिखरे। इसया अपने गुटस्थों लेकर आनग हो जाते हैं। रेजमा कहती है, "क्या 
कहें, आन्टी किसे दोष देंगे? भाइया को ? नहीं। तब तो है इतनी मद्दत 

================================

1. कमलेश्वर, भुष-टोसवर - शहीद, रू. 103
में वह हम सब को समेटे हैं, घर तो है, जहाँ सब चिप जाता है। घर नहीं होगा तो हम अपने जो हुए लन को लेकर कहाँ जायेगे।

इसी तरह का समर्थन रेखा। जो रेखा को बुझा को लड़को है। करता है। वह घर के बिखराय के बारे में रेखा से कहता है। "दोदी, अब इस घर का वन्दन वातावरण तह नहीं जाता।" रेखा के निराहार - पूर्ण शब्दों का जुनकर वह सिंह-तो गई। तो क्या घर दूरेगा? यह बिखरे हुए लोग आखिर जायेगे कहाँ?

"भूत पगला। नहीं ऐसा नहीं तो क्यों हैं। जब घर में रहने वाले हो दोबारे तोड़ देंगे तो घर कौन बनाएगा?

"मगर दोदी, दोबारे तोड़ दूर दूर रहो। दूरे घर में के रहेंगे। जिस घर को दोबारे हमारो लज्जा को फिराये हैं, वहीं भर दूर जायेगी तो दूरे दोबारे वाले घर में कौन रहेगा। कौन अपने आपको बेगम बना कर जियेगा।"

आज हमारे समाज में माता-पिता, बहन भाई आदि के रिश्ते स्वायत्तों से भरे हुए हैं। जिस कारण परिवार में विघटन उत्पन्न होता है जिसे निस्माते लेकर द्वारा रचित "पतझू" को आदर्श "उपन्यास में पिंजूरिक फिरा गया है। कुंवर ने कही बार अपने माता-पिता से उस विचित्र विवाह को छोड़ने को वात कहीं क्योंकि इसके कारण उसके शादी उसके रङ्गश नहीं हो पायेंगी। और वह अपना निर्दय तक भी बड़ी बड़ी बज्जा खत्ते, क्योंकि अमर वाले पहेलों में धन्या करने वाली लड़कियाँ रखती थी।

अनुक्रम पर बोइकर होटल

===================================
1. मेटल निम्ना परोक्षै, उसका घर, पृ. 74
2. वहाँ, पृ. 75
उन्हें रहने लगाता है परन्तु एक दिन अनुभा का भाई मनोज और उसकी बहन पम्मी उसके पास आते हैं और कहते हैं कि "अब हम अपना घर ले रहे हैं कम-कम मनोज को वाइफ़ को तो हम बेकार बिरियान में नहीं रहना पड़ेगा। अनुभा के मन में कहने करोट का झटका पल भर के लिए सर से रेग गया। अनुभा का मन एकदमः बुझ चला " है, अब मुझे ही रहना है अब मकान भी बदला जा रहा है। वह यह भी सुनुन चुक दे है कि पम्मी ने एक तरह से मम्मी और हैडा को यह धमको ठी क ही दी थी कि यह घर नहीं छोड़ा तो वह देस के बाट कॉलेज न जा नौकरी कर लेगी या जो भी पहला लोग कर ली चाही हो बेकार हो, उसले शादी कर यहाँ से तो चलो जायेगी।

पम्मी ने कहा - कल ही पूरी कर पैटा भरना है। अनुभा भी स्वयं मिलेंगे कि कैसा मकान है क्योंकि झॉड़ी और मम्मी का कहना है कि उसे भी अब साथ रहना है।

मनोज ने बातें - बातों में कुछ हूँ भी जाता दिया था कि टीटी, आप साथ में रहती ले कितना अच्छा लगा और घर की इंस्टालमेंट खुदाने में भी काफी आतानो हो जातो। आप बेकार होस्टल में अलग बचां भी उठा रहते हैं और अकेले रहने को मुसीबत भी।

आज संयुक्त परिवार मिलित होकर एक परिवार में परिवर्तित होते जा रहे हैं। धनुं के कारण संयुक्त परिवार का विभाजन मम्मा का लिया द्वारा रचित । वेसर । उपन्यास में चित्रित है। परमबीज की शादी रमा नाम की लड़की से होती हैं। वह यथा दिन परमबीज के माता-पिता के

1. निस्ममा नेवती, पतझड़ की आयातें, पृ. 165
वास दिल्ली में रहते हैं। परन्तु बहुत शीघ्र ही उनका परिवार विषाणि हो जाता है। परमजीत को बहन बिबाला को शादी हो जाती है और परमजीत की माँ ने रमा। बहू के दौज का सारा सामान अपनी बेटी को दे दिया। लब से रमा के मन में अपने लास के पुत्र आँखें को भावना भर गयी। परमजीत को माँ को रमा से घरेलु विषाणि होने गर्ल हो गयी और श्र रमा की आँखों का आकाश भी अब धीरे-धीरे उठने लगा था। इसी लिए जब परमजीत ने जाने का प्रस्ताव रखा तो कोई पुराक्षिया नहीं हई।

परमजीत को सारे वास या पयारत धन होता तो वह अपनी बेटी को बाजार से नया सामान खरीद कर देते हैं वे देते हैं। उसे अपने बहू रमा की के दौज की वस्तुएँ अपनी बेटी को देते जो जलन न पढ़ते हैं।

धन का तत्काल व्यसित के रिस्तों में फिस पुकार दरार उत्पन्न करता है, धन कमाने की होर में पुत्र विश पुकार अपने निपट के की अन्तिम इत्तता भी पूरे नहीं कर पाता। इसे दोपक्ष खदेलवाला द्वारा रखित *** प्रति-धवनियाँ उपन्यास में विपिन किया गया है। नीलकन्ठ के निपट विस्मयो को देख विशवास कि उनका अन्तिम समय आ गया है। जाने ते पहले एक नज़र तूहे देखना दाहत हैं। नीलकन्ठ पिता का पत्र पाकर दरिद्र जाना चाहते थे, परन्तु जब मैदा जी ने। जिन्होंने नीलकन्ठ को बैठे के तरह पाता था। तुमन की नीलकन्ठ के कहा उस नीलकन्ठ वनस्पति को भावना मोटिंग कर कहे हैं। रथ तुम चाहोगे कि यह पहली मोटिंग हो तम। विश कर दो। नीलकन्ठ के मन के भाव इन शब्दों में अयक्त हुए हैं। "ठीक हो लो के रथ लेंगे है पापा? तथा जवत्तू है कि काफी के मुद्दा अभी हो जाये?

=================================
1. ममता कानिया, बेघर, पृ. 168
दे बय भी तो सकते है, उन्हें देखने के लिए फिर भी तो जाया जा सकता है लेकिन मोटिंग तो टालो नहीं जा सकती। और बाद में आपके से काका के द एक सुन्तापी मित्र का पत्र आया... उमाकान्त जी नहीं रहे।
आकिरो ध्वो तक पुक्कारा इंतजार करते रहे। फिर उनके प्राण भी आंखों से ही निकले। उनके अंतम शब्द थे... "नोबू नहीं आया 9 खेद अब उनकी आत्मा को शान्ति के लिए प्रार्थना करना। शरीर भटका तो भटका आत्मा न भटके।"

पवन-पोत्सु के पुत्रान्व के कारण भी आज के परिवारों में दिवज्ञ दिखाया देता है। मैहरुम्मा परबेज़़ शारा रहित। आंखों की दक्षत्व दहलाया, उपन्यास में इसका विचार किया गया है उपन्यास की नायिका तालिया के माता-पिता के विचारों में मलभद्द है, क्योंकि तालिया को अभी एक लड़की घराने को बेटी थी और गांव में पहले उम्र में खिलाड़ी। तालिया के पिता जो बुज विचारों दाला आदमी ही न देखा था। गांव में बाद उन्हें नैसा वालायर मिला था। वह उनसे क्षिति नहीं। तालिया के माता-पिता में हमेशा ठंडा रहता। इसी ठंडे के कारण तालिया अपने आपको अलग और परेराजन अनुभव करते थे ये देशी ही एक गाम, वह में ठंडे के बाद का तनाव था। तालिया बहुत जबो-जबो सामने के लांड में ठहर रही थी कि शमीन। जो उसके अक्षण के पास आया करता था। आया। शमीन ने उससे घड़ो-बहुत बात की जो अक्षर चला गया। अक्षर से किसी घंटे के पतन के और फिर जोर-जोर से चिल्लाने को आवाज में आने लगो। शमीन परेराजन-सा बातर आया और उसके पास झड़ा हो गया।

* * *

1. टीम्पिट खड़े-खड़े, पुस्तिखड़नियाँ, पृ. 48
"अन्दर क्या हो रहा है?" तालिया। वह शमीम को बनी रहे में, वे गयी और अन्यान्य बोलीं। "आप मुझसे शादी करेंगे?" शमीम आनंदवर्धन ने बाँटा - ता रह गया। शमीम की ऐसी युग्म देखकर वह उतार या दिखाई हो गयी। "भोलिया। मैं हूँ। या न मैं" उसके उत्तर या दिखाई हो गयी। हूँ। इसी घटना। मैं इस घर के वातावरण से हटता घटता गयी हूँ कि बाहर भ्रमने की बहुत अहंकार होती है। वहद आप "हूँ" नहीं करेंगे तो मैं कितनी भी वक्त कितनी के साथ शादी कर लूंगी। अज्ञात दादा कुछ भी हो।

सत्तारान के कारण माता-पिता में किस प्रकार विघटन होता

है इतने दौरे जल्दी दूर राहत "कोटरे" उपन्यास में चित्रित किया गया है। सितंद्र की माँ के बच्चों में "मेरे कितना मना करेंगे पर भी तेरे पापा ने निर्धार निर्धार अस्तर को होन्सल में रेत कर देख गया। मैं कहती है विवस्तल में रहने वाले बच्चों को धरते ते, मां-बाप के द्वार नहीं रह जाता। सेरे पापा ने योग्य बार तो मुझे इस बार पर भयभीत ही जड़ दिया... तुम्हें क्यामालम आजबल जमाना कितना बदल गया है... तुम्हारी तरह ही घटना हिला कर घूल - उपहार रखा। वोके - गुल्मे में तह देखकर क्या नीचे बेटी को जिन्दगी काटेगी... या मेरे बेटा तुम... जैसी कितनी ठोल को

==================================

1. भेदभावनीता पसे. ओखियों की दलली. पृ. 15-16
2. दीपक बन्धमाल. कोटरे. पृ. 48
जून से लटकाकर जिन्दगी और जीवन बनाता रहेगा . . . ६ अंश, बच्चों
को जमाने के लिए उनके दो, उन्हें नये दुनिया से जीने दो। ।

अपनी ईश्वरी - देवी भी संज्ञात परिवार के विचारों का कारण
वनता है। कृपणा सोबती द्वारा रचित "मित्र मार्जनी" उपन्यास में
इसका निदेशन है। गुजराती लाल की पत्नी पूलावली लीला, प्यारी व
झगड़ालू है। वह अपने पति को अपने विवाहानुसार बना द्वार में पूरा दालती
है। वह हमेशा गवनों को मांग करता है। वह हर समय अपने गृह भेजी तास
धनवली से लूटती रहती है। "क्या - पूरे के जिनका इस दर दृष्ट हालात है।
जिन हमें अपने से भाग ही बने होते हैं, जो अभावे सबसे होते हों, उनका लोग पूर्वी
ही जा रही। दिनभर गूँल्ल वीका श्रेणी शाम के बच्चों के लिए खेली रोटियाँ बनता
लगता है। इस बारे में मेरे क्रोका नूद २ पूर्व है उनके जिनके बसम भेना रहता है।
महीने में दस डार गृहका लाते हैं। " ।

समाज में अपने बेटे को बनाये रखने के लिए और निजी द्वारा
के लिए पिताज द्वारा अपनी इकलों बेटी की बुद्धियों का द्राय पर लगा देने
है। वह भी विचार में होता है। जिसे दीपित खुदेलवाल द्वारा रचित "पुस्तिकामिनी"
उपन्यास में चित्रित किया गया है। नेलकार्ना मेहता की बेटी रागिनी किसी
लड़के से प्रेम करती है परन्तु उसके पिता चाहते हैं कि उसका विवाह भी समान
रूप के बड़े वर में होना चाहिए। वह कहते है तिन्हें कोई भावुकता है। वह

1. दीपिका खुदेलवाल, "कोने, पृ. ४८
2. कृपणा सोबती, "मित्र मार्जनी", पृ. ४७
रागिनी का रिता मनोरंजन राखे के उकसै वेटे राजीय से करना चाहते है क्योंकि मनोरंजन राखे उनके आर्थि में प्रसिद्ध है। उह उस प्रक - दृष्टिकोण के रिते में अदलकर समाप्त करना चाहते है। रागिनी रो पड़ी थी, वह चिंता नहीं लोटा है, जो आप भेजा कर रहे है। नीलकांत मेहता ने कहा, "मैं रागिनी को उड़ावतारो आँखों को ओर ते मैं फेर
लिया।... चिंता समय मैं रागिनी से नहीं, रागिनी मैं भेजे अंद से
सबीर अस्फल रवें पूरा था..." अब तो आप चुप है न पाया। उसने अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से मुझे रिता दृष्टिकोण ते देखा कि मैं भी भीतर
tह एक झालोपन के अलावा को एक चुंब रहे चिरकर रह गया।"

यदिति के माननिष्ठा भी पारिवारिक दृष्टिकोण का कारण
बनता है। जिसे न मुढ़ा गया द्वारा रचित "अनिलम्" उपन्यास में अक्षित
किया गया है। अविच्छेद भारती र से तो द्वादश ॥ में जीता है, लेकिन
मानसिक र से अलग में बोध रहता है। जिस कारण उसका तारा पारिवार
दृष्टि-दृष्टि कर चित गया। प्रायम् कहते है कि अनिलम् "यह घर दूसरा रहा है।
दूसरा है। तत मिर छुटे, करी फट कर रहेगा। कोई नहीं बनेगा यहाँ।
कोई। तुम दूसरे देख लेना अनिलम् यहाँ इतने जलने आगे कि दूसरे कर यह घर
गिरेगा नहीं, अ भाप बनकर उठ जाएगा। हस्तिये मिट जाएगी इसको।" ॥

==================================
परिस्थितियों विधुन --
==================================

परिस्थितिों के कारण भी कई बार पारिवारिक विधुन हो

जाता है जिसका स्वरूप मुढ़ा गया के "अनिलम्" उपन्यास में दृष्टिकोण होता
==================================
1. दीपित सफेदवाल, पुरातितविक, पृ. 14
2. मुढ़ा गया, अनिलम्, पृ. 224
है। अविजित को पत्नी ग्राम बोला है। उसका बेटा युधिष्ठिर भी अलमान्य बच्चा है। अविजित को बेटी पुष्पा ने पर से भाग कर गांव कर ले। पुष्पा ने अपने पिता को पत्र लिखा, "पूज्य पिता, तैयार कृपया समझिए। हम दिल्ली छोड़ना जा रहे हैं।

उनके मां-बाप के गांव के बच्चे का इतिहास अद्वितीय यह कदम उठाना पड़ा। तब तक नाराज नहीं रहे। मैंने अपनी जिम्मेदारी बुझ निभा दी। कैलाश राव हर दुखित से योग्य रह गए हैं।

इसी उपन्यास में यह भी दिखाया है कि अविजित को दूसरी बेटी के मुख्य भी हैं। डॉक्टर जेन के साथ भाग गई। "तूफान में दूर कर निरंतर वेदु की तरह तड़प कर अविजित के कहा। ग्राम में बाढ़ हो। डॉक्टर जेन उसके पिता समान है। "पिता समान। "पुलब और पिता समान। अविजित ठठकाया हीं दिया। ऐसे हैं क्या रहे हों दूर के कहा "डॉक्टर जेन की उम्र वायरस से कम नहीं है। इस पुकार अविजित ने परिवार दूर बिखर जाता है।

परिचालक सम्पादक के पुभाव के कारण --

परिचयक सम्पादक के पुभाव के कारण पारिवारिक विषय सूची

बाला द्वारा रचित। "मेरे सन्नियास। उपन्यास में निर्धारित है। रत्नेश रत्नेश महादुर और उनकी पत्नी शैली में तलाक हो जाता है। उनके बच्चे किसी ने नियम न हो। रत्नेश महादुर के शहर में, "बच्चे माँ" तक भी ।

1. अमिताभ विजय वर्मा, गोविन्द, पृ. 14
2. मुकुंद गणेश, अनिल प्रेम, पृ. 225 और 251
ज्यादा "ईंदियेंट" निकले। लड़की ने लोलट साल की उम्र में ही कानून की आँख में धूल ढूंढकर सिपाह मैरिज कर ली। लड़का बाबू न रहे। प्लक बिलाने के पास में दरस पुकारा वर्ल्ड - दूर कर रहा है। "

परिवार संस्थान के प्रभाव के कारण संनातन किस प्रकार माता-
पिता की उपेक्षा करती है इनका निर्देश हमें दीर्घ संदेशवाला दरा।
"कोहरे" उपन्यास में दृष्टिगोचर होता है। निकीड, इन्ती-नियर, एम.ई. बनकर लौटा तो वह अपने पापा से बोस नहीं पच्चीस हो चुका था। निकीड की माँ अपनी बैटी नियान्त्री से कहती है। "तेरे पापा ने आपना बट्टी। अपने कालजूं की टोरो। का द्याल छोड़ दिया था, लेकिन उनका कालजूं बेटा। एक दिन सीधे रजिस्टर में दस्तावेज करे सादो रचा बेटा और उसे लिए अपने घर आ आया - "ममो, तेरा बेट्ला है। यार तो अंगूठ ... लड़कारीः खेम कहू। माफ करना ममो, तुमसे या पापा से ज्ञात नें हो की जब नहीं समझी। शादी मेरी और स्नेहला को ही रही थी। बर, अब जो होना था, हो चुका। अप या पापा कोई बेड़ा करेंगे तो मैं सुनूं। सच्चे या सुनने वाला नहीं हूँ।... कहिए, अब ठहरे या बच जाओ।" 2

अप की पुकार-पोल्ट्री अपने माता-पिता की छोटी-सी बात को भी सत्ता नहीं करते। माता-पिता जो दृश्यों को सत्ता करे जिन बच्चों का खालन-पोक्षण करते हैं, वही बच्चे बड़े होकर उनकी इच्छाओं को लौटकर धर कोहर डे जाते हैं। जिसे दीपिता खंडेलवाल ने "कोहरे" उपन्यास में चित्रित करने का प्रशंसन दिया है। निकीड की शादी की चाह महीने हो हुए

1. गूढ़ बाला, मेरे सन्तिथ पथ, पृ. 74
2. दीपिता खंडेलवाल, कोहरे, पृ. 48
ये। निश्चय और उसकी पत्नी को लड़ने-खड़ने, बैठने को तौड़ने - फौटने और बैठने - चिकनाने को आपके अन्ये लगी। एक-दिन निश्चय के पापा गल्ले में उबल पड़े ... मेरे पार में यह तब नहीं ढोला डोरे। अर्थर लोग देखते सुनते हैं, क्या कोई यह तुम्हे शरीर को अपनी मजे है, चलो हमने मान लिया। लेकिन क्या पहुंचो तो पूरा नरक हो बना दोनों? 
... तो सर्वश्रेष्ठ आपको मृत्यु कर हो ... कभी निश्चय बेटी से अपने माता-पिता को छूटतिया रहेती हुई हो जाता था ... तीनों इंकैल ... अपनी मातृत्व।

अहाँ मृत्यु के कारण वारियालिक टिपन का ध्यान ममता कालिया ढूँढ़ा है। "केसरे" उपन्यास में किया गया है। परम्परा के मरने पर किस प्रकार उस के माता-पिता अपनी बच्ची को ही अपने हाथ की मृत्यु का कारण मानते हैं। रोने के बढ़ते उम्र के एक हजार घर में तनाव पूर्ण मातृत्व बन गया। परम्परा के माँ-बाप ने लानों में बाहर करनी शुरू कर दो। अगर रगा बच्चों के लिए दुख गर्ह करता तो परम्परा को माँ-पिता कर करता, "मेरे बेटे का दुख शर्म का पिया है, जो दुख पीने बच्ची है। एक दिन मुझ नहीं दिया, मैं बच्ची बनती ने, ठंकी बनता कितना कितना रहता। उन्हें गला। अब तो ऐसे बोल रहे हैं वैसे में कई तुः हैं।" 

परम्परा के बाप ने कहा, "उसे मारकर तो बुद्धि की, अब सारे वैसे पर हां नहीं कर पेटेंगे।"

उन्होंने तो कया-बेंक अकाउंट ही नहीं खोला। जो ऐसे टी पैसे में बचाती थी "भेज दिल्ली" की रट लग जाती। परम्परा के माँ-बाप 

--------------------------
1. दोपित्ता खण्डकांन, प/ रोड़े कोड़े, पृ. 48
बोले "हमारा बुझापा बिगड़ गया। अब हम कहां जायेंगे।"

द्वारकी और विषया होने वाली लड़की के माँ-बाप अत्यन्त दुःखों होते थे। बेटी की दुर्दशा पर आँधू बहाते हैं। उससे पुर्ण तहानुभूति रखते हैं। यहा - रमा के माँ-बाप बोले -- "हमारी बेटी को बीच धार में हुबो गया। ये तो उसके सिंगार के दिन थे। इन उमर में हमारी बच्चियों को जोग दें गया। तब के मातम ने पैसा लग रहा था, औस परमजीत पिकनिक पर चला गया है।"

मृत्यु के कारण उत्पन्न पारिवारिक विघटन को उषा पियांकटा द्वारा रचित "स्कोणी नहीं राधिका" उपन्यास में विचित्र किया गया है।

राधिका के पिता एक उन्नतरामन्त्रीय क्यार्य ग्राम विद्यालय प्रोफेसर है। उसकी मां का स्वर्गवास को घुका है। भाई अपने व्यवसाय, रथ-गुहा - गुहा से प्राप्त केवल तथा पत्रों में मगन है। उसका वित्त नामक एक युगिकाल तथा प्रौढ़ अध्यापिका से दुसरा दिवाड लिया जाती है। और वे राधिका के चाहते हैं।

"बेटी, आपने साहसी मित्र और में विवाह करने जा रहे हैं। राधिका ने बॉयफ्रेंड पाया हो और देखा। क्षणिक में उसके अन्दर से एक लुकान गुजर गया। कुछ की गेंदों में उंगली फंसान राधिका ने अपने को संकु च किया।"

राधिका हुई कारण घर छोड़ कर विदेश चले गयी।

मृत्यु के कारण पारिवारिक विघटन राजकमल घोषरी द्वारा रचित "मकुली मरी हुई" उपन्यास में विचित्र देता है। निर्मल उल्लास बिद्वार के एक छोटे से गाँव में पैदा हुया था। पिता के मरने के बाद उसकी माता ने पैतृक मकान

1. महला कारिया, देयर, पृ. 214
2. बलान, पृ. 215
3. उषा पियांकटा, लकोली नहीं राधिका, पृ. 48
बेच डाला और सकः लारी " वाले ब्राह्मण के साथ भाग गई। वह केवल दस साल का था। मकन फिक जाने की उसे तकलीफ हुई। माँ को आदमी की जड़त थी। की। लेकिन मकन जयः से गई? ... गाँव से भाग कर निम्न करांवी कला गया। करांवी से लाहौर। तियाल कोट के एक मुसलिम होटल में प्याले थोपने लगा। निम्नलिखित टॉपपर अखबार बेचता। शाम को होटल में काम करता था। इस प्रकार निम्न के पिता की मृत्यु के बाद उनका परिवार विद्रोहित हो जाता है।

मिठाई चीज़ें समस्या के कारण भी परिवार में बिघटन आ जाता है। विभाजन चिन्ता सुनीता गैंगु प्रकट "मरणार्थी " उपन्यास में लिखा गया है। शोभना अरोक नाम के लड़के से प्यार कहती है बो एफएफ़ोस हैं दे। शोभना के खेल्ले के विचार ते कि एफएफ़ोस के लोग वरीतें होते हैं और उनकी जिन्दगी का बोई भरोसा नहीं। वे शोभना की मां की कहां और अपना बेटी होते हैं। शोभना अपनी अध्यायिका गोमा से बाहर होती है, सबी में नहीं आता दोटी। वह दुखेगा हो सलको मार उलटेगा। डूद भी आतावस्था कर लेगा। नहीं, मैं किसी के उघाट नहीं करूंगी। खेल्ले लग करेंगे। लो बम्पर में मौसम के धराया चली जांची। दो एक साल घड़ों रटकर पड़ा। फिर तौफीक ओर बांड़ा। या तो इस सीधे वह युग में भूल हो जायेगा या खेल्ले मान आएगे ... पर दोटी। अगर सीमा पर लहां खिड़ गयी हो, वह वाढ़े एक दिन के लिए, अरोक यहाँ आएगा ... बता जो दोटी में उसे निराश करके मृत्यु के चूंख में कैसे भेजते थे। - ²

===
1. राजकमल दौरानौ, महली मरी हुई, पृ. 44
2. सुनीता गैंगु, मरणोत्तर, पृ. 119
यक्षिण आजेमा समाज वैधानिक व भौतिक उन्नति के
हास्यजुड़ मानसिक लय से पिछड़ा हुआ है। सुनीता जैन द्वारा रचित "मरणालोक"
उपन्यास में यह विचित्र करने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार
विधान का उपेक्षा सामाजिक विधान होता है। गोमा के उसका बाबा
यार्डन नीर. कहता है कि बिंदीया तुम बाबा निकला उठो। फिसी के
पर आया - जाया करो। जो स्वस्थ रहता है। एक बार गोमा डॉक्युमेंट्स के
पर जाता है तो बाहाँ उसे लगाता है कि उसने वहाँ विध्वंस उपस्थित किया
है। यहाँ आकर एक "एस्प्रे" बार वह नींद को बुलाती कही। फिर बाबा
पर ही कोश हो आया।। गोमा की मन: सिद्धि इन शहदों में पृथक होती
है। कहाँ जाए बिंदीया बाबा। स्वस्थ तथा होता है। जो जीवन जीने
में स्वस्थ है उनमें आकर गोमा लड़ा फालू ही हो तो बी जाती है। उसका
उसमय मेलेखा, शेखा से मेल नहीं खाता। उसका लघु, बड़ी पत्थर - तो उसका
शरीर, जाते ही लोगों में सन्नाटा कर देता है। उसका यह अकेलापन अपनी ही
मजबूरी नहीं है। लोग भी अब उसे नहीं ले पाते। कभी तोहत है लकेद
वनना छोड़ दे, चूहा पड़ने, जरा - जरा बेकाबू पर आ जाए। पर श्यामरे
अलमारी बोलती है तो रंगों को यथार्थ बरदाश्त नहीं होते। गुमलीं कहो
बाबा, स्वस्थ क्या होता है ... जल जाना, जलने से बरामद या जला डालना
और तो कोई उपाय नहीं दिखाया। "

========================================
1. सुनीता जैन, मरणालोक, पृ. ७४
पूर्ण विधवा किसी पुरुष से सहानुभूति दिखाये तो समाज के लोग उस पर व्यङ्ग्य करते हैं। इसे यथार्थ द्वारा रचित "बारह घंटे" उपन्यास में विविधता किया गया है। विनौ अपने पति को मुल्क की प्रथम साल गिरह पर लानुए से नैनोत्तल आयो क्योंकि उसके पति की कब्र नैनोत्तल में थी। वह अपनी कृष्ण जैन मे पहले धौरों देख स्कार कृष्णस्वाम जाने के लिए लागावे को गये। कृष्णस्वाम में विनौ ज्यो में मैं तेरा में होती है जो कि कौद्य तथा विधुष था। बार के कारण विनौ को देखने में वाक्या पड़ा। जैन में विनौ के दायित्व न लिये दे पर झेलना होता है यान बिनौ का सहारा आता है कि मुझे नैनोत्तल में मिठा पैसा मिल गया था। वह इसी अधिक और अत्याचार अस्थित्व में है कि उन्हें अचूक आ तकना विलुप्त सम्भव नहीं। इस समय में उनकों के माफ़ पर हैं। इस सहारा को सुनकर विनौ और उसके पति पांडे को इलाहाबाद इन गहरों में व्यक्त हुई है। अर जाने हारण, हस रहने लो मार दाना। युवक किस इलाहाबाद में गये। पांडे तक बारह घंटे में हो कृतिया बन गये। इसने तो हचका कृतिया भर गयी। हम अपने मुहं दिखाएं। कैसा पांडे बनाये थे।

पूर्ण दिखवा धौरों देख के लिए विनौ पूर्ण के पास रख जाता है तो लोगों के आकार कैसा विविधता हो जाता है। इसे यथार्थ द्वारा रचित "बारह घंटे" उपन्यास में विविधता किया गया है। जैन मे पहले विनौ के देखने में वारे के मत कहता है कि उसके लिए अकलाप अस्थित्व है। वह सुख कर आधो रह गयी है। वह मानसिक यात्रा के कारण आत्महत्या कर लेना चाहती है। पांडे। जो जैन मे पति का दोस्त है। कहता है यहुंद में लेने पर कि कौन उन्हें व्यक्तिके साथ सुख्ख पुरुष का रहनी है तो तुम सुख कर रही हो।

1. यथार्थ, बारह घंटे, पृ. 97
यह व्यक्ति और अकेलेन में बिना रहती थी तो तुम्हें सत्यों होता है।

जेनी ने कहा आग लगा उसकी सुरक्षा और सत्यों को। डायना भी उनसे दिन आगे जा लेना लगा करती रही। भाई में जायें छुआ। स्वाग भी कैसा, लोगें को अपने गम में बहलाने के लिए सुख कर आधी रह गये।

--------------------------------------------------

उत्तराधिकार संबंधों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण संबंध पति-पत्नी का होता है। आज की नारी इसी भी क्षेत्र में तथ्य को पुरुषों के

कम नहीं मानकर। दूसरी और परम्परागत गृहिणी पुरुष अपने अधिकारों को

छोड़ने के लिए लेता नहीं होता, तो नारी के उलांत को सिध्द कर सेता है। यह सिद्धता दाय-पत्नी जीवन के विचलन का प्रमुख कारण बनती है।

आज की विद्यमान अर्थ है -- व्यक्ति के अह्न का विस्तार।

व्यक्तिवादी और भौतिकवादी धर्मयोग ने रूटी -- पुरुष दोनों के अह्न को

इतना उग व पुखर बना दिया है जिसे व्यक्ति देने अनानुयोग होता जा

रहा है। आज पति-पत्नी के संबंधों के विचलन में अह्न भावना प्रमुख है।

जिसे मनु भंडारी द्वारा रचित "आपका बांटी " उपन्यास में विचित्रित किया

गया है। उपन्यास की नातिका गूढ़ पढने किसी का हरस्तक्षेप सत्य नहीं करती।

बाद में नौ जोशी के हस्तक्षेप को बरटाव कर लेता है। उसके तारे कायम -- कल

सहज श्लेष्म से समय पिंड न होकर अजय को पुस्तकिया के पलवक्ष्म ही होते है।

--------------------------------------------------

1. यमपाल, बाटां घटें, पृ. 100
अपने पूर्वपरित्र अजय को "कृषि कर दिखाने के लिए" यह कृषि भी बढ़ बरातात कर सकती है। शुकन के मन को कसक भी बढ़ी है, "तब पूछ जारे तो अजय के ताय न रह पाने का दंश नहीं है यह, वरनु अजय को हरा न पाने को धुमन है यह, जो उसे देने-देने साती रहती है।" डॉ० जोशी ने ताय उसका विवाद सूचन में बंधना भी इसी वृद्धि का परिवार यह।

अहू भावना के कारण विषय को दंपति बड़ेलवाल द्वारा रखित "कोदेरे" उपन्यास में भी दिखायी देता है। सुनील और तिमी के जीवन के विषय का कारण सुनील जो अहू भावना है। सुनील विवाह के बाद यह क्यों लार-बार टोटरते थे ... तौन्दर फेकाह वस्तु या पान में नहीं, देखने वालों आँखों में भी होता है। सिमी, में "लुकस" में यादि कि रेडिक तौन्दर में सुनील से का तब्दील थी ... उनके "ग्रीक" गाळ के शारीरिक सौंदर्य के समूचे मेड़ा त्योहार अनिश्चित नहीं था। देखने सुनील का यह क्यों दुख अथवा - सा ही लगता था। धीरे - धीरे लगने लगा था कि वह अथवा नहीं अपनाने है। सुनील ने मुझ से साथारं बढ़ रहे वाले गुफ्ताय से ग्रेम और विवाह आने मुझ पर अहसास निम्न था।

जब पति अपनी पत्नी के आत्म-विवाह को तड़न नहीं कर पाता, तब विवाह उपाय होता है। तिमी को अपने बढ़ बरात जो शेख कोई कामयाब नहीं था। वह जानती थी कि नै अपना सुंदर न होती, मुझ में एक विहार आयाम है। सिमी का यह आत्म-विवाह धीरे - धीरे सुनील को उसका अहू लगने लगता। सिमी है शब्दों में "मेरा कहा अहू विवाह विवाह कि मुझ में

1. मन्नू भण्डारी, आपका छंद, पृ. 39
2. दीपिता बडेलवाल, कोहरे, पृ. 12
अर्कशं पर तुलीन को मेरा अभ्यु लगने लगा। उनके स्वर्य के अभ्यु के कारण।
अत्यं पर तुलीन । ते घमेसे घमेरे अंगों को समेट लिया था।... वह घमेरे
नन को भी समेट सकते थे... यदि केवल अपनी । इंगो । को परे
रब देते।।


बीमारी के कारण विषयगत=


एक थकने पति की बुझ नौं घर सकतेहो पति - पत्नी के
सम्मानों में घंटे घिरार उत्पन्न होता है इन्हों तिमाह गुलाब गर्म द्वारा
रचित "अर्थो म उपन्यास में लिया गया है। अधिकार और उसी पत्नी
श्यामा के सम्बन्ध नाम - जाना को है। श्यामा की घाट है जबसे उसे गुलाबालित
श्यामा है तभी से घंटे घिरार डालत रहे हो गया है। श्यामा की आँखों में
घंटो विकार हुए हैं कि अधिकार हो उसके कमर में केना धारिण है।...
अधिकार भी महादेव हैं ही दूसरे देर उसके पास बैठे आये, अक्षम यह श्यामा
के कमर में जाने से कहता है। अधिकारिय मानसिकता उन शवद्रों में उभर कर
आती है।[" दूसरे देर श्यामा के पास बैठे है ओर अपने ही पात - फिर डालत रहे
श्यामा न करे। श्यामा की निकायों आँखों को अंदेसना कर भोगे।
घंटो को मुकार को नाना करेगा। वह अन्दर छुपे गा।... श्यामा को प्यासी
आंि उसके बैठे पर घप्पा हो जाते।।। वह महबुस करेगा कितने जिसम पव
पर सरा पानी श्यामा दुर्धा ने आँखों में भर लिया है। फिर भी अविद
प्यासी है। घंटा कर बैठे उठेगा, ऊँचे स्वर में... विलाही ऊँचे स्वर में


1. दीक्षित कन्देलवाल, कोहरे, पृ. 12
ही बोला करते हैं -- तब श्यामा कहेगी, "तुम जाओ, बाहर जाकर बैठो। स्वभाव है यहाँ। तुम मेरे परवाह नहीं..." श्यामा का आवाज सुंदर कर स्केल गी। कोई आ जाए, शुभा, पुभा, कोई दोस्त, कोई भी उसे श्यामा के पास बिठलाकर यह भाग निकले... कहै... दफ्तर। हाँ, कहीं भी, दफ्तर ही नहीं... घर से बाहर तो है न।" 1)

मेरे मेहरबन्निता परदेश द्वारा रचित "उसका घर" उपन्यास को नायिका शैलमा का दाम्पत्य पूर्ण उसकी बीमारी के कारण विपिनी होता है। शैलमा का पति दो साल के लम्बे दौरे पर जाता है और शैलमा से कहता है कि वह अंत में इस दौरान अपने भक्ति के घर चल जाएँ। इसके उपरांत शैलमा अपने भक्ति के घर आ जाती है और कई महीनों तक उसके पति का कोई पत्र नहीं आता। अधानक एक दिन उसके पति का पत्र आता है कि वह उससे तलाक देना चाहता है। शैलमा के भक्ति उससे पूछते हैं कि तुम्हारी क्या राय है? शैलमा का कथन है, "यह तो दिल के समबन्ध होते है। पत्नी को भी में मांगा हुआ अधिकार कभी खुद नहीं करता। जब उसके मन से ही में उत्तर गया तो जब तक या के यह अधिकार या सम्मान पाया तो आयेगा नहीं। रहीं अदालत जाने को बात तो पति-पत्नी में यह दरार पड़ जाये तो कुनिया की कोई अदालत उसे नहीं चोट लेती। मैंने तोपल लिया है, में तलाक स्वीकार कर दूंगी।" 2) शैलमा अपनी बुआ को ही रेशमा से बोली -- "समबन्ध जुड़ने में समय लगता है, टूटने में नहीं। में तो भक्ति पर भार नहीं टूटूंगी। में सम.ए. डूं तरिके कहीं। रेशमा, जब मुझे शादी के बाद पहला टमा का टोरा

================================
1. मुद्रिता गर्ल, अनित्य, पृ. 3
2. मेहरबन्निता परदेश, उसका घर, पृ. 5
पड़ा था। तब उन्होंने मुझे अजीब तरह से देखा, तभी भी समझ गई थी कि मेरी उस बोमारी का पता लगाने से उन्हें गहरा सदमा पड़ूँगा है। यह बार-बार मुझे कहते यह दोरा तुम्हें कब से पहुँचता है? तुमने या और किसी ने पहले बताया क्यों नहीं? बैठे उन्हें लगा यह बात उन्हें न बताकर उनके साथ बड़त बड़ा थोबा किया गया हो, तभी मैंने इस घटना की आहट पर तो धी ।" पर यह सब इतनी जल्दी और इतनी अध्यादेश होगा मैंने नहीं सोचा था।

 annonces

विवारों की भिन्नता --

विवारों की भिन्नता के कारण दामत्य जीवन में दरार उत्पन्न हो जाती है। इतनी विवाह सुनीता, एक ही रात रहता "अनुपूर्ण" उपन्यास में फिरा है। मदन अपनी पत्नी को धन, क्यारा, नौकर, मकान, कार जानिया भौतिक सुख - सुविधाओं देख यह समझता है कि उसने अपने पति होने का दायित्व निभा दिया। मदन को कल जाने और ताज बेलने का शीष है। पर उसकी पत्नी छिड़ी दिन-रात किताबें पढ़ती रहती है और अकेलापन अनुभव करती है। मदन अपने भिन्न भारतीय से कहता है, "उसने सारा जीवन कुछों पर किताब लिये मेरी पत्नी में बैठे विवाह दिया और हमारा अन्य से किया उसे बैठे देख भी बझाना उठता था। एक दिन कल से लौटा तो उसके पास में सूटकेस रखा था... अपनी धन में मैंने यह तब नहीं पूछा "कहीं जा रही हो क्या? मुझे आफिस जाने लगा तो बोली।" कल कीसीट बुक करायी है।

================================
1. मेहरनिन्ना परदेस, उसका घर, पृ. 5
अमोल क्षेत्र के पास जा रही हैं, कुछ दिन को/आपूर्व आया तो उसकी डॉक्टर का पुरौण मिला। बेहद नाराज थी... आप कैसे पति है। कल ते आपको इलजाम में भी कि आप अपने या कोन करने। आपकी पत्नी का केस काफी तीर्थसाद है। पहले से क्यों नहीं दिखाया। उसी समय डॉक्टर के पास भागा। बोली, "भुक्क का डॉक्टर है। कुछ तक वेज़ खा है।"

क्यों में पहले उसे लाया नहीं। क्यों कि पति कुछ लाघ से पुरौण नहीं थी। पर यह उसे बहुत समझाया कि अच्छे से अच्छे डॉक्टर के पास जाने है पर वह फटा। फटा अंत में देखता रह गया। और उसके देखने ने में रूठकर क्या एक साथ बरसा दिय।। भेजि भी उसे रोका नहीं। लोग, इंग्लैंड जा रही है, शायद वहां कुछ आया बन जायें। मैं उसके साथ नहीं जा सका।-- भेजि पास पास पोट नहीं था। मैं जाऊँगा। पर डॉक्टर कहती है कि यह के चांस हज़ारों में से एक से भी कम है।।

== पति-पत्नी के व्यवहार ==

पति-पत्नी के व्यवहार के दुग्ध मेल न बने पर दामपूर्ण जीवन विपरित हो जाता है जिसे ममता कालिया द्वारा रचित "शेयर" उपन्यास में विशेषता करने का प्रयास किया गया है। परमजोत की पत्नी रमा उसे दुर्गा बनाने में लगा हुई है। इतनी देर से वाली विनाशक की तो उसने कम्पना भी नहीं की थी। उसने सोचा था उसकी बीवी सीबी - सादी होगी जिसे अपने जैसा घाटे, टालेगा। पर रमा कम्पना, जिबटी, बेलिकाज और करत होते।

==

१. सुनीता जैन, अनुसंधान, पृ. ५९-६०
के साथ-साथ असममें नहीं थी था। इसलिए उसे कई फर्ज़ नहीं पड़ा या उसको बातें परमज्ञत को अँकों में बताने जाती हैं। रमा के व्यवहार के कारण परमज्ञत को अपने मित्रों में कितना लजिज्ज होना पड़ता है, वहाँ -- परमज्ञत ने अपने मित्रों को शादी की एक पार्टी में परमज्ञत ने उसका पूछ हो विगाई दिया। पढ़ने वाले उस दिन के लिए अपने कर दिया। किस प्रकार वे बात कर ले तो रमा ने कहा, "मोट बढ़ा बढ़ा है, बढ़ा हो बढ़ा हो है, बोटा तो एक नहीं है।" परमज्ञत ने उसे पूछ कहने रहने को कहा। पर बेज़ के आने पर रमा ने मोट का डोंगा उठाकर उसे दिया। "यह बढ़ा बढ़ा आये। चार आने का मोट हाल है, बाकी है।" वह उसे जोक कर रहे थे। उन्होंने नवदुधु से वह उस परमज्ञत नहीं को थी। परमज्ञत ने उस समय बेज़ का महसूस किया। जब बेज़ बिन बेज़ आया तो तार्किक से दूसरा अनुभव कर दिया। परमज्ञत तार्किक वापस बेज़ हो रहा था कि प्रांत बेज़ रमा ने झट से तार्किक तार्किक पकड़कर नोट उठा लिया। सभी लोगों को स्थिति अजब - सोढ़ते गये। परमज्ञत को लगते व्यापक। "इसी प्रकार रमा परमज्ञत को अपने व्यवहार से मानसिक ध्येय तथा सम्पूर्ण नहीं कर पायी। व्यवहार के शेष न आने पर द्रामयत्थ जीवन में अपने ध्येय बिखारवे को दूर रखने के लिए पूछे। "बिन बेज़। उस पल में दिखाया किया गया है। सिमंती धर था। इतवारका टिन था। "बेज़" के होने पर भी, पापा के लिए गरम-गरम पुलके ममी हो सकता है। नीचे से सेंकर बेज़ रहने थे। "अब बस भईं, पुलके हो गये हम तो।" पापा ने एक फोटो डाकर लेते हुए कहा।

================================

1. ममता कार्तिका, नेपार, p. 130-181.
ममी, हाथ बीटर आधित से हाथ पौकती आ खड़ी हुई थी... तीस से बा निया न। पापा दिकारत से ममी को देखते कह रहे थे... "क्यों? घर में कोई टावल नहीं है? आपको यह ताजी से पोकने का आदत। यह चमचमी के ताजी घास को हुमान जी के सिन्द्रू - तों बिन्दी... अरे भाई, जरा तो बेहरा देखने लायक रहा करो, देखो पति और तेल से बैठे विपर्वता हो रहा है। तेल की सारी शोभी उड़ें लो घर था जो तेल भालों से बेहरे पर ऊपर आया है... द हैल चिट पू।"।

अभू व्यक्तिक

अभू व्यक्तिक के कारण दामत्व जीवन में जो विचय होता है उसे दो-चित्र कण्ठवाल द्वारा रचित "प्रतिष्ठापियता" उपन्यास में विचित्र किया गया है। नैलकान्त बेहरा ने बच्चन में ही अपने माता-पिता के अप्रती आपसी मस्ती को बिखरते देखा था। उसके मन में बच्चन की वह एक बात तो बड़ी गहरी श्रद्धा थी। नैलकान्त के पिता छोटी - छोटी बाली के लिए उसकी माँ को झटपट रहते थे। यहाँ तक कि वह अपनी दुखा से भिनिक भिखारी तन को भी कुछ नहीं देखती थी। पिता के जबरान में "माँ निहायत " निकाय "। अरे, और कोई औरत होती तो अपना देखती, यह बेवकूफ़ तो तद परापर देखती है। मैं न रोकूँ तो घर बार दुकान देती। अरे बता, बेटे, क्या जरूरत है उस अन्धी बृहदिया को रोज खाना देने की? इसलिए किये अटे - टाल की दुकान है... "कहते-कहते पिता गाली - गलोज पर ऊपर आरे... " हुकम क्या इससे बाप की है।" उस अन्धी

1. दीपिता कण्ठवाल, कोहरे, पृ. 34
बुढ़िया को खाना देने पर तकती से रोक लगाने पर मां ने मुझे पुलाया, नीलू केटे, मेरा एक काम करना २ वह मेरे हाथों उस अन्यी बुढ़िया को खाना भिजवाना वाह रहो थे। \"\\n\\nऔरत की जिन्नगी में पर-पुलब के आने के कारण भी दाम्पत्य जीवन विघटित होता है जो मेरहमन्त्रा परवेश द्वारा रचित \"अंखों\" की दललीज \"उपन्यास में दिखाये देता है। प्रस्तुत उपन्यास की नायिका तालिया के घेत में प्रोड़ा है जिस कारण वह मां नहीं नबन सकती। काफी दमाईथा बढ़ाये, मां में हो भी लीखने का प्रयास किया गया, पर वह नहीं मुख। लगता है, कहाँ वह ज्यादा न बढ़ जाये। इसना होने के बावजूद भी शमीम। तालिया का प्रति \"उसे अत्यधिक प्रेम करता है। वह उसे दुःखी नहीं देखना चाहता, इसीलिए वह चाहता है कि तालिया कुछ दिन अपने मायके रह आये जिससे कि उसका दुःख कुछ कम हो जाये। तालिया के मायके कुछ दिन तो तालिया और शमीम बदले रहते हैं। परस्तु जब शमीम लोटना चाहता है तो तालिया को बिना भावों अनिश्चित की आशा को होने लगती है। वह चाहती है कि शमीम उसे अलग छोड़कर जाये, पर शमीम उसे प्यार के समझाता है कि तुम व्यक्ति ही मन में भ्रम नहीं पाते तुम जब छोड़ोगी में हुईंगे आकर ते जाऊँगा। परस्तु शमीम के जाने के बाद तालिया की अम्मी तालिया का परिवर्त जाएगा नाम के व्यक्ति से करवाने है। जाएगा एक गादी। शुद्ध व्यक्तित्व है। तालिया की अम्मी तालिया का बच्चा न होने का कारण अंत शमीम को समझती है। और वह चाहती है कि तालिया और जाएगा का शरारतिक सम्बन्ध स्थापित हो जाये और तालिया जाएगे के बच्चे को मां बन जाये। इसी काम के लिए वह तालिया

=================================
1. दीपिका खण्डेनवाली, वृत्तिधमनियाँ, पृ. 24
और जावेद और तालिया की सहेली। जमीला को ताघ लेकर गंगुः
हेम दिखाने के बहाने उन्हें आपस में उत्तेजना का अवसर देती है। पहले
तालिया जावेद से दूर भागना चाहती है, परन्तु धीरे-धीरे वह भी
जावेद से प्यार करने लगती है, स्थायीतः तालिया ने अपनी सारी जिन्दगी
एक घुटने, एक छटपटाहट में बिताई है। जावेद तालिया के कहता है, "तुम
बहुत तेरे में आगी हो ने रोज़ियों में।" मुझे आज लगा, हम दोनों ही
की हर बात मिलती है जूलतो है, है न । तालिया ने कहा -- "हाँ, बुदा
ने हम दोनों को एक हो मूँ में बनाया होगा।"

पर तालिया, वह गड़बड़ कैसे हो गयी? दोनों पुलवे बदल
कैसे गये। तालिया कुछ तेरे तक आंखें की तराजू में शमीम और जावेद को
लौटी रही।"

तालिया ने मां जावेद से तालिया की शादी करना चाहती
थी, पर जब जावेद को पतन को यह पता चला कि जावेद और तालिया के
शारीरिक सम्बन्ध है तो उसने तालिया को भला - दुरा कहा । तालिया अपने
अपने आपको इस अपराध के बोझ से मुक्त न रह सकी। तालिया और को हमेशा यह
भय लगा रहता कि कहीं शमीम को जावेद और मेरे सम्बन्ध मालूम न हो आये।
जिस कारण वह शमीम को पूरा प्यार न दे सकी। इसी अपराध - भावना के
कारण उसने आत्महत्या करने का प्रयास किया और अन्त में घर छोड़कर चली
गयी।

=================================
1. टौक मेहरुनसा गर्वेज, आईयों की दर्जन, पृ. 56
दोपित खण्डेलवाल द्वारा रचित "प्रतिलक्ष्यिनर्ग" उपन्यास में इस तथ्य को उभारने का पुस्तक किया गया है कि अबला और नीलकान्त का विवाह तो हो गया, परन्तु पर-पुरुष के आगे के कारण उनका दामाद्यं जीवन विपद्ध हो गया। नीलकान्त को पत्नी अबला विनय नामक लड़के से प्यार करती थी फलतः नीलकान्त को बैला स्थान नहीं दे पाती। अबला के शब्दों में, "मैं तुम्हें उस सोटे की बात सुनी और लेना चाहती हूँ जो आज मेरे और गुंडारे बीच जीवन-भर चलता रहेगा। तुमने मुझे मेरी लिए नहीं मेरी सियासियों के लिए स्वीकार किया है... इस विचार केवल के लिए, इस अपार रेत्वार के लिए... और मैं भी मात्र तुम्हें पापा के केवल और रेत्वार के उत्तराधिकारी के रुप में स्वीकार किया है। हम दोनों ने ही बराबर का सोटा किया है अब हमें धार्मिक कि इस सोटे को ईमानदारी से निभाये...।"

फिर नीलकान्त ने का पुराने प्यार और स्थान का क्या होगा। मैंने उसे बुलाने को कसम नहीं खाई है। इसके बाद में तुम भी उस गुजरातिन सुभा से समझना उनके रव तकें हो। नीलकान्त के शब्दों में, "मेरी अंजलि जीवन भर स्वर्णांकों से भरी रही आइ है, यद्यपि मन के निविड़ स्वात्मक कक्ष का सुनाया आज भी पूले से अंजलि भर लेना चाहता है।"
आदमी, बुरी दशा में माँ के पास आया था। उसकी आँखों में भूख-प्यास
दरवाजे की छटपटाहट थी... "गंगा, तेरे दमबुजे आया हूँ, बया सके तो मुझे
नहीं। मेरे बच्चे को, मेरे घरवालो को बया ने। उसे टेकते ही माँ तड़प
उठी थी। तुम्हारे तबियतले ठीक है कान्हा। पैदराज को बुलाओ।
भूख-प्यास की दूल्हा पैदराज के पास नहीं गंगा, तेरे पति के पास है।
मेरे गाँधी को तरफ तो छोटी-छाल से पानी नहीं दरकर... तारी फसल
घूपट हो गयी... इस ताल भूखमरी फेर गई है... अपने लिए न भी आता... एरन्थुआ
अपने बच्चों की खातिर, उनकी माँ को खातिर तेरे
dरवाजे आया हूँ। गंगा... तेरे पति को तो परसा रो की दुकान है...
साहित तू मदद कर दें। माँ तुरन्त पिता को दुकान पर गईयी... 
मुनो जो, कान्हा आया है भूख-प्यास से फेंकाल। उसका सारा परिवार भूख
से दम तोड़ रहा है। गाँधी में भूखमरी फेर गई है। उसे महीने-भर की रस्ता
के दो। या पिता का आदेश पूछतांव माते वाली माँ का वह आदेश देवा-सा
स्वर गुड़े अपरिहित तो लगा, फिरतु में प्रभान्त और गर्जित हो उठा था कि
मेली निरोध - तो लगने वाली माँ ऐसे आदेश भी दे सकती है।

"आदेश कान्हा आया है। और तू उसके लिए रस्ता का इन्कृष्ट कर
करने के लिए मुझे कहने आया है।... थल घर सारा इन्कृष्ट करता है।
पिता तड़प कर उठे। दुकान को ताला लगाया। घर की ओर कोट में पैर
पड़ते बक्से लगे। पिता ने घर पहुँचा हो अंगन में केबुध - से पड़े कान्हा को
एक लाल लगाई। वे दूसरे जोर कर मारना ही जा रहे थे कि माँने प्रबल देगा से
उन्हें धर्म दिया। वे गिर पड़े।
अच्छा, तो अपने यार की खातिर तुमने मुझ पर हाथ उठाया है, कमोनी- बेहया। । । । । पिता उठकर खड़े हो गये थे और माँ को तड़ातांग पोटने लगे थे अभमरा - ता कान्हा उठकर पिता से गुंध गया । । । माँ अंधे होकर गिर पड़ी थी। कान्हा को उन्होंने इतना पोटा था कि उसके मुंह और नाक से बुंन बहने लगा था। उसे घसीट कर दरवाजे से बाहर करते, उन्होंने दरवाजे को सांकल बाहर से बढ़ाते, ताला झक्के मुझे बाहर ने कड़ा था - - । आए, पड़ी रहने के अपनी माँ को। होज आये तो कह देना कि मर जाय। "

नीलकान्त को मेरे पिता जब उसको माँ पर हृदा आरोप लगाते है कि तुम्हारी और कान्हा को बरसाने से साँठ-गाँठ का रही है क्योंकि वह मन्दिर में पढ़ा मरसे-दम तक तुम्हारे नाम की माला जा रही है तो नीलकान्त को माँ कहता है, "तुम जानते हो, मैंने जब से तुम्हारा हाथ पकड़ा है, अपना धर्म पूरा निभाया है ... मैं कुंटरा नहीं ईं, नींदँे के बापू, न कान्हा कमोना है ... कमोने सिर तुम हो। 

"हरामजादी। तब ने मेरे अपर हाथ उठाया था, जब गाली दे रही है। तू छिलाल नहीं तो और क्या है? । । । आत्मक मर जाएगा तो तू भी परान दे-देगी, तो ते दे ते सुन ले। कान्हा मर चुका है। "कान्हा मर गया ... कान्हा मर गया ... असफुट रवाए में बुझुंदाती माँ मर गिरी। अंकल हो गई। तोगरे तोगरे माँ ने कुई में छलांग लगा दी थी।" ।

================================

1. दोपिता खण्डेलवाल, प्रतिप्रदीपिनियाँ, पृ. 29

2. वडी, पृ. 29
पुस्तक के अन्य कार्य - क्षेत्र में किसी अन्य लड़के से शारीरिक सम्बन्ध स्थापित होने पर किस प्रकार टाम्पात्य जीवन में विश्वास उत्पन्न होता है, इसे दो प्रकार खण्डकाल कार्यरत " तोड़ने " उपयोग में विश्विद किया गया है। विवाह की पहली ही रात सुनील ने सिमी का रोशनी कहा अगर कि में गुस्सारो, " ह्यूदिगिसस्ती " को मेनेंटन रखना बाहर हूँ...। परन्तु हमारे समाज में गुमों की कथनी और कार्यों में अन्तर है। कही सुनील जो सिमी को यह बात करता है कि कह उसको " ह्यूदिगिसस्ती " को बनाये रखें।
एक बार सिमी का जन्म सुनील को " सरप्राइज " देने के लिए रेडियो-प्रोग्राम के आफ़्त को स्वीकार कर लिया। यह परन्तु सुनील को सिमी का गर्भ में अच्छा लगा और उसने सिमी के कहा मेरी आत्मा आप आइंडा कभी प्रोग्राम नहीं देंगी। सिमी के शब्दों में " लेकिन तुम तो मेरी " ह्यूदिगिसस्ती " को कामयाब रखना बाहर धे न।... क्या सब कुछ था? " हो, कहा था, लेकिन तुम मेरे हाथ से अपनी " ह्यूदिगिसस्ती " को बनाये रख सकती हो, अपने हाथ से नहीं! " इस कारण उनके जीवन में दरार उत्पन्न होने समय है और उन्होंने हिन्दू सुनील की टॉस्टी अपनी कौशल निर्माण इस ध्वनि घोष के हो गयीं और वह टॉस्टी छलनी अन्तिक बढ़ गयीं कि इरा कर गाय गायनी ने सुनील के साथ गाय। हर बार नगरी इरा का ध्वनिकर भी बढ़ा उन्मुख होता और वह सांसक लिखन में घुम जाता है।।। सुनील उस पर मुक्त होते गये और इरा के कारण ही सुनील और सिमी के टाम्पात्य जीवन में विश्वास उत्पन्न हो गया के सिमी के शब्दों में ध्वनि हुआ है " एक दिन शाम को सांसक से लोडकर बैडमिंटन का दरबारा बन्द पाया, तो चोट कर या लिखती नोकर। से धुभा- "अन्त्य को है? "

====================================
1. दोपिता खण्डकाल, कोबरे, पृ. 28
:- 213

शिववेंद्र कौंपे गया और बोला -- "अंदर भ्रमया के साथ यही है साली।" 
हुमील ने आधा फटे बाद इतमोनानन से टन दरवाजा बोला। इडवर को 
डुकम दिया इतने पर छोड़ आओ। मैने चीख कर हुमील ने कहा -- "होश 
में आओ। यह गर नामूना है, इल्लीगल है, इत कम अज्ञात एडूल्ट 
में तुम्हारी रिपोर्ट कर दूंगी।"

हुमील हुमील ने उसी इतमोनन से उत्तर दिया --- "मैं आपके 
इडवर का दूसरे पहले ही फाइल कर चुका हूं।"

आह हुमील। कितने भवान्क स्खा से "इलेक्ट्रोग्लास" थे, तुम 
कि भावनाओं के कोमल - पारा को तक की घुसी से सहजता से काटकर बेल्ट 
सहले थे ... "लेकिन तुम मेरे बाद कोई किया था कि मेरे बाद कोई नहीं 
... वह भी भूल गये ... 9 हाँ, किया था वाटा। लेकिन तो भी रहा 
हूं। तो तुम्हें भी आजादी के दे रहा हूं।" गॉर्ट यू बड़मार्प माई अपनी। 
... कम आन लेट अस लेलिविट द लास्ट नाइट लाइफ फ्रेंड्स ... हुमील ने ऐसी 
सहजता से मुझे ब्रेक पर बैठे लिया। वे न कुछ अलख पटा हो। न घटने दाला 
हो ... किंतु उस रात मैंने समर्पण नहीं किया ...। "नहीं, अब और नहीं 
युग मेरे हाल पर छोड़ दो ... मैं पापा के पास लौट जाऊंगी। ...

ओ. के. आई डियर। मैं हिरोनेशन करा दूंगा। जितने हुमें 
रास्ते में कोई तकलीफ न हो ...।" हुमील ने आधी पीर सिगरेट की गें गें 
दे पर रगड़ कर बुझाते हुए कहा "आई मर्ष ऍज़ दिस ब्रांड दू..." कितना 
निर्माण सार्वजनिक ...। "और अन्त में इसी हुमील ने तिमी न पर चार्ज की 
तक का भी आरोप लगाया और इडवर के लिया।"
हिंदुत्व पुस्तक के जीवन में अन्य लड़की के अन्दर दाम्पत्य
जीवन किस पुकार मिलाता जा हो जाता है इसका निर्धार मुद्रा गर्ग द्वारा रचित अनिलप "उपन्यास" में किया गया है। ग्राम्य को बालने जब से ध्रोमोसम हुआ है वह अपने पति अविभित्र की सन्तुष्ट नहीं राख सकती है और ऐसी स्थिति में लगें जैसे औरत झुड़ अकार उसके गोद में गिर पड़े। उसके शरीर को बांधों में जब से वह साथ ले और ... एक बार भी नहीं "न कहै। उसके शरीर का भूखा जानवर ...।

जानवर, हाँ, और भूखा ...।

हर ताला उसका मन ग्राम्य के प्रसिद्ध हाथ से भर उठा। वादलों पर बनी औरत के साथ अपने जानवर फिरने दिन भूख ढ़बारे सकता है। भूख लगाने पर ग्लाप, भूख दबाने पर खोब। ग्राम्य का दृढ़ भविष्य था कि मां बनने की सैयदी में व्यस्त औरत शरीर के गुणों नहीं बन सकता। ऐसे समय के तो जानवर भी झलकते हैं। क्या अक्सर उठने थी। बोबी बेटी। का जन्म हुआ तो वह बीमार पड़ गयी और छठ महीने तक बिस्तर पर से नहीं उठी। हमें वह फिर का बोह अविभित्र को हो उठाना पड़ा है। वह आदमी उसके कम्यों पर विषमेदारों पेंक, निशचत हो रहा है।

इस और ग्राम्य ... सेल्फ सिद्धांत आढ़म्बर, जीव-तत्त्व विशेष धोया खोल।

================================================================================================
...

== प्रतिलक पर सन्तुष्ट न होने के कारण -- सिद्धांत --
================================================================================================

एक के धरातल पर सन्तुष्ट न होने के कारण दाम्पत्य जीवन में निश्चित को निष्पादित सेल्फ द्वारा रचित "पतलशक्त की आवाजें" उपन्यास में

== मृदुला गर्ग अनिलप, प्‌ 142
चित्रित किया गया है। अनुभा को तहतो तुम्हीला अपने पति से स्थान अलग रहने लगती है तुम्हीला अनुभा से कहती है। "पुरुष अपनी महिला के स्मरण पर हक मानते है, हर रात और कभी-कभी तो हर तुम्हारे भी। हर रात का यह चक्कर इतना - इतना बुरा है कि मुझे लगने लगा था कि मैं "कह " होती जा रही हैं। रात एक आई रम गैप्ट दूमन। जानती है तब इत अगर चतुर से नफरत हो जाती है। जरा बिस्तर का साथ तेने से मना कर दो कभी, तो ट्र्यूटेमेंट पूरी मिलता है जैसे घर में पढ़ी कोई बेकार बीजू रह गयी हो औरत।
तब हर बार में झड़ा चित्रा जाता है। बेहो शैल तक देते जैसे में भी बड़ा हुआ।
तब बोला, बुध को क्या महसूस किया जा सकता है 9 वही ना 9 तुम्हीला ने कहा था - हां-हां... मुझे अकेलापन मन्दूर है। पर यह पाखंड नहीं।
तुम क्या तुम्हारो हो तुम्हारे मेरे पति मेरे लिए अपने ये 9 न भी तुम्हारे किसी जात पर मना कर पात नहीं बनाये रखना चाहिए बाल्क अपनी बुझता बनाये रखना चाहते है। बेकार करते है कि उनको प्रेम में उनकी भद्रता उठ जायेगी।
अगर हमारा डाइवर्ट हो गया ... और अनु. में जानती हूं कि इस आदमी को मेरे ज़रूर नहीं ... किसी भी एक आदर-सी औरत को ज़रूरत है।

तेलस के क्षरतात पर सम्पूर्ण न होने के कारण पतनी किस पुकार अपने पति के बारे में उलटा - सोया कहती है इसे कुछ तोबती द्वारा रचित * मित्र मरजानी * उपन्यास में दिखायी गया है। मित्र के शब्दों में "अब तुम्हीं बताओ, जितना, तुम फैला सत-बल कहा से पाउँ - लाऊँ 9 देख तुम्हारा मेरा मेरे रोग नहीं पहचानता। बड़ा हुआ हर्ष - पवारे और मेरे छोटे देख में इतनी प्यास है, इतनी प्यास है कि मुझना-तो महँगा है हैं।

1. मित्र गाने मेराना, पतलू हो आवारे, पृ. 157-158
2. कुछ तोबती, मित्र मरजानी, पृ. 20
भिन्न की तथ्यात - अभावान्य उसे घायल बना देती है। वह
एक-पिताजी तास - सत्तु तक को लाज नहीं रखती। इसी करण वह जली-भूनी रहती है। जब उसकी पिताजी की गोद हरी होती है,
तब पड़ते ही मिनो बूढ़े गुलाल करती है। पर बाद में उसकी तनी-तहब
मातृत्व की भावना उसके स्मरण को और तिस्ता बना देती है। ' मेरा बस
ये तो मिठकर तो कौरव जन झारुँ पर अभान्य अपने लाड़े लेने का भी तो
आउ-तौं जुटाब्रो जुटाई। मिनोगे उस पत्थर के ऊँचे में भी कोई हरकत
तो हो।'

===============================================
परियोजना संस्थान के पुरातात्व के कारण विपन्न --
===============================================

परियोजना संस्थान के का पुरातात्व के कारण पति-पत्नी दोनों
स्वातंत्र जीवन व्यतीत करना चाहते है और एक दूसरे पर निर्भर नहीं होना
चाहते। जिसके कारण दांवन्य जीवन में विकल्प उत्पन्न होता है। इसका
निष्क्रिय सूक्ष्मता द्वारा रचित। 'मेरे संस्थान उपन्यास में उपलब्ध है।
रत्नेश माहूर (उपन्यास के नायक राय की पत्नी का दोस्त) का अपनी पत्नी के
तलाक हेतु लिख हो जाता है कि वह स्वतंत्र विचारों का अभिकर्ता है उनकी
पत्नी शैली विएन्ट स्टाइल * से बच्चों को पालना पसन्द करती है। दूसरे
हिस्टरियन की भी जरा ज्यादा ही कायल है। वह इसके अपने में इतनी
इंडिपेंडेंट है कि पति के दूसरकोश को सत्ता से ज्यादा उत्तमिति देतोगरी नहीं।
उन्हें अपनी पत्नी शैली का मन जानते हैं पर बुद्ध उसके समझा बुझा कर नये
स्वतंत्र जीवन के लिए मुक्त कर दिया। राय की पत्नी के बेटू बेटियाँ। श्राप

===============================================
1. मिनो मराजानो, पृ. 44
और रिम्बो आपत्ति में बातचीत करता है कि अंकल के साथ एक बड़ी टेन्जरी हो गयी है। वाइफ से हाड़कौर हो गया है। हाड़कौर उनकी वाइफ को तरफ से हुआ है। इसमें अंकल को भी मजबूरी रही होगी।

अंकल का कथन है, "आज यह दूसरी मजबूरी के बगैर तलाक नहीं हो सकता था। पर उसे रोके रखकर करता क्या क्या । . . . क्या किसी को प्यार करने के लिए भी कम्पा किया जा सकता है? यह सुबह तो किसी भी कोठे पर खरीदा नहीं जा सकता ना।"

यहाँ के कहने पर कि आपकी लाइफ मजबूरी लोकली हो गई है तो -- अंकल चौहान, "इसका मतलब यह तो नहीं कि वह इसी आधार पर में उसकी लाइफ लोकली कर दूं? धौलिक अधिकार और स्वातन्त्र्य की इतनी लम्बी - चौड़ी बातें हम करते हैं श्राय। पर जब अपनी बात आती है तो प्रायः शुद्ध सामाजिक प्रतिकृति और स्वार्थ को आइं में पुढ़वाप नकार जाते हैं। मुझे मुख्य भैं न गिले पर संतोष तो है कि में उसे मुखी कर सका।"

हमारे समाज में प्रेम-विवाह तो होते हैं लेकिन उनमें से अधिकांश पूरों हरदार सकल नहीं हो पाते और परिवार-परिवार के बीच छोटी-छोटी बातें को लेकर विवधत को स्थिर स्थापन हो जाती है जो हमें दीन बीर खण्डेलवाल द्वारा रचित "कोलेरा" उपन्यास में दिखाया देता है। निषिद्ध और अन्नेरा का प्रेम-विवाह होता है और उनकी एक बेटी होती है। बेटी के नामवरण को लेकर दोनों में झगड़ा हो जाता है और वे अन्ग-लंग हो जाते हैं निषिद्ध की अवधार निमित्त वित्तीय नेपुटिया का नाम पूछता है निषिद्ध नाम ।

सारा झगड़ा नाम को लेकर ही तो ही गया . . . में उसका नाम रंजना रखना

--------------------

10. सूर्यवाला, मेरे साथ, पृ. 73
चाहता था, एन्जेला के अंजना नाम से मिलता - सा। ताकि में उसे "रंजू" कह सबू, जैसे एन्जेला को अंजना बनाकर "अंजू" कहता था, लेकिन नहीं। एन्जेला और उसको माँ अंजू गई... नो। द गई विल बी फिलियन्रैड रज्जु। "एलिजाबेथ 'शाद काम' लिज"... बात साफ थी, भें हिंदुस्तानी था, जैसे बेटी फिलियन्रैड बनायो जा रही थी। निर्देश कहता है कि "एन्जेला याज हैलिया हर ओन ऑफरर्स मेरे भी अपने ऑफरर थे।" निर्देश कहता है कि "एन्जेला याज हैलिया हर ओन ऑफरर्स मेरे भी अपने ऑफरर थे।"

==================================
अन्मेल विवाह के कारण विवेचन --
==================================
अन्मेल विवाह के कारण किस प्रकार दामोदर जीवन में विवाह होता है और कई बार यह विवाह समय में परिणत हो जाता है। जो रामदर विश्व द्वारा रचित "अपने लोग" उपन्यास में दिखाया देता है। पणिडित प्यारे लाल मुखराज ने अपने पहली पत्नी के गर्मने के हाट पवास वर्ष की अवसर में सतारा अलार्ड वर्ष की लड़कों के दूसरी शादी कर ली। पणिडित जो नामी मुखराज ही नहीं थे, वे अभी समाज - सुधारक और वक्ता भी थे। वे सामाजिक, सार्थिक और धार्मिक समाजों में भाग लेते थे और अपने पुरावशाली पुरूषों के जनता को अभिभूत करते थे। किसनु अब उन्होंने समाजों में भाग लेना बहुत कम कर दिया। पणिडित जो के कुछ विशेष मुर्मरकरण की घर में पूर्णपूर्ण हर हो गयी। पणिडित जो यह सब देखते हैं, घर के भीतर पत्नी को गानी देते हैं, पीटी भी है लेकिन कुछ कर नहीं पाते और अब पणिडितानी कुलक पंडित जी का विदेश करने लगी है और कहता है, "मेरे जो मजबूत"
होगी क्लेंगो, तुम बुढ़ा बुटट मेरे किस काम का है? और कब्दराज जो फिर निर्देश करता था या तो मेरे अंग्रेज हाथ उठाया। उनका पत्नी ने नतिखरा के सारे बन्धन तोड़ दिये हैं। प्रियदर्शनी जी कविता से कभी-कभी सातार घर लौट आते हैं और लौटकर अक्सर पाते हैं कि प्रियदर्शनी का कमरा बन्द है। एक दिन तो उनके सब का बाँध ढूँढ़ गया। प्रियदर्शनी जी ने जोर से खिलाड़ पर लात मारी। दरवाजा बुला। मुम्बई के दिनदहशत भाव से झंडे तिक गया और प्रियदर्शनी ने क्षोभ से पूछा: "भी क्यों के आए जी। प्रियदर्शनी ने उन दोनों को गालियों देने के नुक कर दी। इस प्रकार प्रियदर्शनी के लिए यह जहर के समान थी जो न घीते बनता था, न किसी के कहते बनता था। एक दिन प्रियदर्शनी जी ने पत्नी से तंग आकर जहर बालिका। और ऐसा तेज जहर था कि प्रियदर्शनी जी के अंगभुन के बुन बह रहा था।"

अनेक विवाह के कारण दामस्कस जीवन का विषय है। प्रियदर्शनी के लिए लोकों नहीं राधिका। उपवास में भी दिखाई देता है। राधिका और डेन का भी दामस्कस जीवन अनेक विवाह के कारण सुखी और सफल नहीं हो पाया। कथौं सी राधिका का डेन के प्रति अक्षम है। त्यामान न होकर एक्साइट हो था। एक स्थान पर डेन कहता है: "तुमने कभी अंदर प्रियदर्शनी के लिए भी प्यार नहीं किया। राधिका, तुम मुझसे अपना पिता दूल्हा रहो या। वही पिता जिसे तात्शात डेन के लिए तुम मेरे साथ रहे आयो थे। पर मैं नृत्यार्च बिना जगह स्थायी नहीं होना पाता, मैं तो स्वतंत्र ध्यान लें।" और मैं तुमसे अपना बोझ योग्य दूल्हे रहा था, पर शायद हम दोनों की सफल नहीं हुए।"

====================================
1. रामदराज मिश्र, अपने लोग, पृ. 75-76
2. उषा प्रियदर्शनी, स्कोगे नहीं राधिका, पृ. 38
असफल प्रयोग से प्रेमी-प्रेमिका के सम्बन्धों में उत्पन्न विकाराव
को ममला कानिया द्वारा रचित "बेहर" उपन्यास में विचित्र करने का प्रयास
किया गया है। परमजीत पहले तो संजीवनी के अपने प्रेमिका को बहुत
अधिक प्यार करता था। दह संजीवनी पर केवल अपना अधिकार वांछता था,
परन्तु एक दिन जब उसे यह प्यार चाहा कि वह उससे पहले किसी और की रह
छुके हैं तो उसके आत्म सम्मान को देने पड़े। परमजीत के मददों में,
परमजीत एक दिन रातवार को संजीवनी को अपने दादा में ले जाता है।
और वहाँ दफ्तर में होने के प्रवासी संजीवनी के अपने सेक्स की पूर्णता करना
घातक है। परन्तु संजीवनी उसे सेक्स के धरती पर सनुक्त नहीं कर पाती और
उसे पता चलता है कि पहले संजीवनी के किसी और के साथ शारीरिक सम्बन्ध
के तो वह कहता है मैंने इस बात को काटा नहीं तो यह चाहिए कि संजीवनी की
उससे अलग एक व्यक्तिगत दृष्टिकोण होगी जिसका भागीदार कोई
और रहा होगा। पहला न होने की निराशा के सम्मान के तास-तास उसे
अपनी जिम्मेदारी का धारा नक्सा मुक्त हुआ दिखाई दे रहा था।।

इससे घर-घर पता चलता है कि पुरुष यदि पाए तो वह जनेक औरतों
ते शारीरिक सम्बन्ध रख सकता है, परन्तु पति नारी किसी दूसरे पुरुष के
संगम में अपने पर किसी कारण के निर्देशित स्त्री स्थान को बैठाती
है, तो पुरुष इस बात को सहन नहीं कर पाता और परमजीत संजीवनी से फिर
बात करना भी पसन्द नहीं करता क्योंकि संजीवनी अपने कार्य के दिनों में
अपने एक दिन विपिन के द्वारा जबरदस्ती इस हादसे का विषय हो चुकी है।

1. ममला कानिया, बेहर। भू. 100
वह अपनी बात स्पष्ट करना धार्ती है पर्यन्त परमात्मा उसके बात को ना मुनाफा और दिल्ली आकर किसी अन्य लड़को से अपना विवाद कर लेता है।

विश्वास यह मैं हम यह जान सकते हैं कि परिवार समाज की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। पर्यन्त ज्यों-ज्यों सम्बन्ध और संबंधीतक का विकास होता जा रहा है हमारे समाज में विवाद उत्पन्न होता जा रहा है।

सामाजिक विवाद के प्रमुख कारणों में से पराराइक विवाद उत्पन्न महत्त्वपूर्ण है। पराराइक विवाद के उत्पादन संयुक्त परिवार का विवाद और दाम्पत्य जीवन का विवाद देखा जाए। संयुक्त परिवार में विवाद के अनेक कारण है। आर्थिक कारण, धनाभाव, पालन-पोषण का भ्राम, विवश-कड़बड़, आपत्ति, दंग - इत्यादि भावना, समाज में स्त्रेस बनाये रखने को धारण, अलावा - कुल साइट।

संयुक्त परिवार के तीन अक्षर परिवार में दाम्पत्य जीवन का विवाद प्रमुख है। आज पति - पत्नी दोनों भी खिलों के द्वारा नहीं रहना चाहते। आज को मारो खिलों भी क्षेत्र में स्त्रोत की पुष्टि के क्षेत्र के रूप में नहीं रहना चाहते। आज को मारो खिलों भी क्षेत्र में स्त्रोत की पुष्टि के क्षेत्र नहीं समझी और पुष्टि भी नारो के सह-विवाद स्थापित करना चाहते हैं जो दाम्पत्य जीवन में विवाद को स्थिर कर लेता है।

दाम्पत्य जीवन में विवाद के अनेक कारण हैं -- अनुभूति भावना, बीमारी, विवाह में भिकार, व्यवहार के दो पेल न बनाना, अन्तर व्यवहार के कारण, जोर भी विन्दुंगाथ में पर पुष्टि के अनुग्रह के कारण, पुष्टि के कारण - खेत में किसी अन्य लड़की से घरी-घरी सहभागिता होने से, वेलके द्वारा पर समृद्धि न होने से, विवाही सम्बन्ध के पुष्टि के कारण, अनुभव विवाह के कारण दाम्पत्य जीवन विवाहित को रहा है।

*----*----*----*----*